

अनुच्छेद
लेखन

काव्याबा हितेंद्रसिंह राठोड
10 - अ

Kavyaba Hitendrasinh Rathod
10 - A

आत्म-अनुशासन : सफलता की पहली सीढ़ी

आत्मअनुशासन एक ऐसी आदत है जो नज़र नहीं आती, लेकिन जीवन की दिशा तय कर देती है। जब हम अपने मन को नियंत्रण में रखते हैं, और हर काम को समय पर, सोच-समझकर करते हैं, तो हम अपने लक्ष्य के एक कदम और करीब पहुँच जाते हैं। सफलता केवल बड़ी-बड़ी योजनाओं से नहीं मिलती, बल्कि उन छोटे-छोटे फैसलों से बनती है जो हम रोज़ लेते हैं। जैसे सुबह समय पर उठना, पढ़ाई या अभ्यास में ध्यान देना, या अपने क्रोध और भावनाओं को संभालना। आत्मअनुशासन हमें अपने विचारों और कार्यों के बीच संतुलन बनाना सिखाता है। यह शुरूआत में कठिन लगता है, लेकिन धीरे-धीरे यही आदत हमारे व्यक्तित्व का हिस्सा बन जाती है। जिन लोगों ने जीवन में बड़ा मुकाम हासिल किया है, चाहे वे खिलाड़ी हों, नेता हों या व्यवसायी - उनकी काम-याबी के पीछे एक मजबूत आत्मअनुशासन रहा है। सच तो यह है कि बिना आत्मअनुशासन के न तो लक्ष्य तय रह सकते हैं और न ही मंजिल तक पहुँचा जा सकता है। यही वजह है कि आत्मअनुशासन सफलता की पहली और सबसे जरूरी सीढ़ी माना जाता है।